शिक्षा में मूल्य और आध्यात्म का समावेश अनिवार्य : मनीष सिसोदिया

आबू पर्वत (**ज्ञान सरोवर**) १९ मई २०१८.

आज ज्ञान सरोवर स्थित हार्मनी हॉल में ब्रह्माकुमारीज एवं आर ई आर एफ की भगिनी संस्था, "शिक्षा प्रभाग " के संयुक्त तत्वावधान में एक अखिल भारतीय सम्मेलन का आयोजन हूआ। इस सम्मेलन में नेपाल से भी बड़ी संख्या में प्रतिनिधिओं ने भाग लिया। सम्मलेन का मुख्य विषय था - " स्व सशक्तिकरण के लिए मूल्य और आध्यात्म " . इस सम्मलेन में भारत वर्ष के विभिन्न प्रदेशों से बड़ी संख्या में प्रतिनिधिओं ने भाग लिया . दीप प्रज्वलित करके इस सम्मेलन का उद्घाटन सम्पन्न हुआ.

ब्रह्मा कुमारीस की **संयुक्त मुख्य प्रसाशिका राजयोगिनी दादी रत्न मोहिनी जी** ने अपना आशीर्वचन सम्मेलन को दिया। आपने कहा कि हम सभी के मन में प्रभु के लिए जैसा प्यार है

वैसा ही प्यार सभी भाई बन्दों के लिए भी होना चाहिए। किसी के लिए भी हमारे मन को कोई अन्य भाव ना रहे। जब हमारा सबके साथ स्नेह होगा तो साफ़ है कि सबका हमारे साथ स्नेह रहेगा ही।

यह मनुष्य जन्म दुर्लभ है। अभी हम सब कुछ जान समझ सकते हैं। यहाँ तक की हम परमात्मा को भी जान सकते हैं और उनकी शिक्षाओं को जीवन में धारण कर सकते हैं। हमें इस मनुष्य जीवन को सफल करना है। परमात्मा का आदेश है की सभी से मिल कर प्रेम से हमको चलना है। यह प्रेम और शांति ही सबसे उत्तम मूल्य हैं जिनको अपनाना है जीवन में। सर्व के प्रति दृस्टि आत्मिक बनाना है। खुद को आत्मा रीयलाइज करने से ही सभी आत्मा नज़र आएंगे।

संस्थान के **महासचिव राजयोगी निर्वैर जी** ने भी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से अतिथिओं को अपना आशीर्वचन प्रदान किया।

शिक्षा प्रभाग के **अध्यक्ष राजयोगी मृत्युंजय** ने भी अपने विचार रखे।

मनीष सिसोदिया , उप मुख्य मंत्री ,दिल्ली शासन ने कहा की आयोजकों का बहुत बहुत आभार है। मैं दूसरी बार यहां आया हूँ। आपका कार्य काफी इम्पोर्टेन्ट है। आप महान कार्य कर रहे हैं।

मुझे सपने देखने की आदत है। मैं अपने सभी प्रिय जनो के लिए एक अच्छा समाज चाहता हूँ। इस सभा कक्ष में बैठे अधिकांश लोगों का सपना एक जैसा ही होगा। उस समाज में सब

कुछ अच्छा ही होना चाहिए। सरकारें सीमित रूप से ही कार्य कर सकती हैं। अगर सरकारें शिक्षा - बढ़िया शिक्षा का इंतज़ाम नहीं कर सकती हैं तो बढ़िया समाज नहीं बन पायेगा। इस सम्मलेन का विषय काफी सुन्दर है। शिक्षा में मूल्य और आध्यात्म कैसे आये -यहीं है शिक्षा मूल अथवा केंद्र। शिक्षा में मूल्य और आध्यात्म के समावेश से हमारा समाज बढ़िया बनेगा -जो की हम सभी चाहते हैं।

बच्चे जिस प्रकार की दुनिया चाहते हैं - शिक्षक क्या वैसा समाज बनाने की शिक्षा दे पा रहे हैं। मुझे तो ऐसा नहीं लगता।

शिक्षा में मूल्य जरूर चाहिए जो मात्र आध्यात्म से ही आएगा।

कर्नाटक केंद्रीय विश्व विद्यालय के **कुलपति एच् एम् महेश्वरैया ने** विशिष्ट अतिथि के रूप में अपनी बातें रखीं। आपने कहा की यह स्थान एक अंतर्राष्ट्रीय शांति विश्वविद्यालय का स्वरुप परिलक्षित कर रहा है। मैं यहां पहुंच कर काफी प्रसन्ना हूँ। मैं सैकड़ों करोड़ रुपैये खर्च कर के भी ऐसा शांति विश्वविद्याला नहीं बना सकता। आखिर लोगों को क्या चाहिए जीवन में ? शांति और स्वतंत्रता। यहां इस विश्वविद्यालय में मैं हर ऐसी चीज़ देख रहा हूँ। मैं हतप्रभ हूँ। दुनिया के हर विश्वविद्यालय में ऐसा ही शांत वातावरण होना चाहिए जो की

नहीं है। अगर आप ऑन लाइन पाठ्यक्रम शुरू करें तो बहुत बढ़िया होगा।

आपने थॉट लैब की जो बात की है वह उत्तम है। उसकी व्यस्वस्था होनी चाहिए। इससे अनेक स्टूडेंट लाभावान्वित होंगे। छात्रों को चाहिए प्रेम और ज्ञान। आप ऐसा ही कर रहे हैं। मूल्य शिक्षा आज की तारीख में अनिवार्य रूप से चाहिए। आप शोध भी करते हैं यह बड़ी ख़ुशी की बात है। आपके इस आयोजन की सफलता की कामना करता हूँ।

एस पी सिंह , कुलपति लखनऊ विश्वविद्यालय ने भी विशिष्ट अतिथि की हैसियत से अपने विचार सम्मेलन के समक्ष प्रस्तुत किये। आज का दिन सच मुच काफी महत्वपूर्ण है। क्योंकि हम मूल्यों और आध्यात्म के बारे में यहां जानेंगे।
दुनिया के विश्व विद्यालय सीमित शिक्षा दे रहे हैं मगर ज्ञान सरोवर आध्यात्म की असीम शिक्षा काफी लम्बे वक्त से प्रदान कर रहा है। इन शिक्षाओं को आत्मसात करना हमारी यात्रा का लक्ष्य हो सकता है। यह यात्रा आंतरिक यात्रा है और अनंत है।
शांति एक ऐसी अवस्था है जहां हर मूल्य अपने सर्वोच्च स्तर को प्राप्त हो जाती है। ओम शांति एक इस प्रकार का ही दावा है जो यहां हर विद्यार्थी हर पल करते रहते हैं। यह बड़ी बात है मगर सच है। हम सभी को भी इनके सानिध्य में रहकर ओम शांति का स्वरुप धारण करना है. इस विश्व विद्यालय में तंत्र को शिक्षा दी जा रही है -यह अनुकरणीय है। तंत्र अर्थात गुरुजन ,कुलपति प्राचार्य आदि आदि। यह कोई सामन्य विश्व विद्यालय नहीं है। यहां से ही हम आत्मा बल की शक्ति प्राप्त कर सकते हैं। यहां का राजयोग आपको योगी -राजा बना

देगा। स्वयं का राजा। इसको सीख कर आप जीवन को धन्य बना सकते हैं। ईश्वरीय विश्व विद्यालय के अलावा ऐसी श्रेष्ठतम शिक्षा आपको कहीं भी प्राप्त नहीं हो पायेगी - यह मेरा दावा है।

ब्रह्मा कुमारीस शिक्षा प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक **डॉक्टर हरीश शुक्ल** ने इस सम्मेलन का लक्ष्य सामने रखा। शिक्षाविदों के लिए यह सम्मेलन खास कर के प्रति वर्ष आयोजित किया जाता है। इस सम्मेलन के परिणाम स्वरुप अनेक शिक्षाविद इस संसथान से जुड़ जाते हैं और फिर आजन्म संसथान की शिक्षाओं का लाभ प्राप्त करते रहते हैं।
ज्ञान सरोवर में परम पिता परम आत्मा की सीधी शिक्षाएं प्रदान की जाती हैं और इस शिक्षा से हमारी अंदर की आँखें खुल जाती हैं। मूल्यों और आध्यात्म की शिक्षा आपको यहां ही प्राप्त होगी। अन्य जगहों पर जिस्मानी शिक्षा दी जाती है जिसका सीमित लाभ ही जीवन को मिला है। अतः यहां की शिक्षाओं को ध्यम से अपने जीवन में अपनाने की जरूरत है हम सभी को। यह हमारे जीवन का सर्वांगीण विकाश कर देने में सक्षम है।

ओम शांति रिट्रीट सेंटर मानेसर , **दिल्ली की निदेशक राजयोगिनी शुक्ल दीदी** ने ध्यानाभ्यास करवाया।

डॉक्टर पंडियामणि , ब्रह्मा कुमारिस दूरस्थ शिक्षा के निदेशक ने मूल्य शिक्षा के विस्तार के बारे में बातें कीं। आपने बताया की ब्रह्मा कुमारिस मूल्य

और आध्यात्म की शिक्षा प्रदान करने के लिए भारत के करीब १६ विश्व विद्यालयों से समझौता हो चुका हैं। अब हम थॉट बैंक बनाने के दिशा में भी बढ़ रहे हैं। यह आध्यात्मिक शिक्षा अब विदेश के विश्व विद्यालयों में भी दी जाएगी - उसकी व्यवस्था हो रही है।

डॉक्टर आर पी गुप्ता , ब्रह्मा कुमारीस शिक्षा प्रभाग में दूरस्थ शिक्षा के मुख्यलय संयोजक ने आज पधारे हुए सभी अतिथिओं का स्वागत किया।

प्रोफेसर बी के मुकेश ने धन्यवाद ज्ञापन किया। **राजयोगिनी सुमन बहन** , ज्ञान सरोवर ने मंच सन्चालन किया। (रपट : **बी के गिरीश** , मीडिया , ज्ञान सरोवर)